क्रांति मिसाइल...

चौधरी महाराज सिंह भारती "अर्जक"

1.11.1918 - 14.09.1995

(कृपया इसका प्रिंट निकलवा कर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : लेखक : दयाराम

सुगत संस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,

लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 31.10.2020

अभिनेत्री : अनामिका सिंह

संपादक : ऐ. के. सिंह

मोबाइल : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक...

दयाराम : जाट साम्राज्य : 1978 में डाक विभाग में मुझे जिस ब्रांच में कार्य करने के लिए लगाया गया था, उस ब्रांच में भी मुझे एक सिंह जी मिले, जिनका नाम ईश्वर सिंह था। ईश्वर सिंह ग्रुप डी कर्मचारी थे, लेकिन मुझसे अबे तबे करके बात करते थे। बाद में पता चला कि, ये ठाकुर नहीं है, यह तो जाट है। यहां जाट ऐसे ही होते हैं। बाद में पता चला कि यहां हर जाति का व्यक्ति सिंह लिखता है। मुझे जब अछूत सिंहों का पता चला, तो उनसे पूछा, कि ईश्वर सिंह ग्रुप 'डी' मेरे साथ बहुत बदतमीजी से बोलते हैं, ऐसा क्यों? बताया गया कि वह आपके साथ ही नहीं, सबके साथ ही ऐसा बोलते हैं, आखिर है तो जाट ही। सर्विस में आने से पूर्व मैं अर्जक संघ का सक्रिय कार्यकर्ता रहा। मेरा संपर्क चौधरी महाराज सिंह भारती से हुआ, जो जाट जाति से थे। मैं इस उधेड़बुन में लग गया, कि ईश्वर सिंह जाट होने के कारण अक्खड़ है, तो चौधरी महाराज सिंह भारती क्यों नहीं? वह भी तो जाट है। मेरे दिमाग में एक और सवाल उठ रहा था, कि यदि जाट दबंग और असभ्य नहीं है, तो फिर गोहाना और झज्जर में उन्होंने अछूतों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया, कि अछूतों को अपना गांव छोड़कर भागना पड़ा।

संगठन के कुछ मित्रों के साथ अरनावली गांव चौधरी महाराज सिंह भारती के पुत्र विनोद भारती से इस आशय से मिलने गया, कि चौधरी महाराज सिंह भारती के जीवन पर कुछ

जानकारियां प्राप्त हो जाएंगी। विनोद भारती जी ने सवाल जवाब की वार्तालाप से मेरा साथ दिया।

मेरा ऐसा मानना है, किसान अपने गदरैले(मक्कार) बैल की गति तेज करने के लिए उसके साथ तेजतर्रार बैल को जुए में जोड़ता है। परिणाम यह होता है, कि वही गदरैला बैल एकदम गतिमान बन जाता है। जाट एक ऐसी कौम है, जिसके दामन पर कभी कोई दाग नहीं रहा। उसने देश के साथ गद्दारी नहीं की, किंतु शासक जातियों ने उसके दामन पर दाग लगाने का अथक प्रयास किया।

इतिहास साक्षी है कि, 712 में जब प्रथम बार मुस्लिम आक्रांता मोहम्मद बिन कासिम ने भारत पर आक्रमण किया। तो उस समय ब्राह्मण राजा दाहिर शासक था। उसकी सेना में जाट, गुर्जर, सांसी जाति के सैनिकों की भरमार थी। राजपूत सैनिक अपने सिर पर पगड़ी बांध सकते थे। घोड़े पर चढ़कर लड़ाई लड़ सकते थे। किंतु निम्न वर्ण और निम्न जाति में जन्मे जाट, गुर्जर, सांसी, न तो सिर पर पगड़ी बांध सकते थे, और न ही घोड़े पर चढ़कर युद्ध कर सकते थे। जिसके कारण जाट गुर्जर और सांसी जाति के सैनिकों में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। और उन्होंने तटस्थता का रास्ता अपनाया।

ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने मुस्लिम आक्रांता मोहम्मद बिन कासिम को भारत में प्रवेश करने का रास्ता प्रशस्त किया। न कि जाट, गुज्जर और सांसी जाति के विद्रोही सैनिकों ने। जाट महाराजा सूरजमल, ब्राह्मण राजा सदाशिव राव भाऊ की सेना में प्रधान सेनापति थे। जब मुस्लिम आक्रांता अब्दुल शाह अब्दाली ने ब्राह्मण राजा सदाशिव राव भाऊ की रियासत को चारों तरफ से घेर लिया। तो सदाशिवराव भाऊ ने सेनापतियों की आपातकालीन बैठक बुलाई। जिसमें प्रधान सेनापति सूरजमल के अतिरिक्त अन्य सेनापति वहां उपस्थित हुए। जब सूरजमल और मल्हार राव होलकर ने खड़े होकर राज्यसभा में रियासत की सुरक्षा के लिए अपनी राय देनी चाही, तो सदाशिव राव भाऊ ने भरी सभा में उन्हें अपमानित करते हुए कहा, "खेती करने वाले जाट और भेड़ चराने वाले गड़रियों की राज्यसभा में राय नहीं ली जाती"। सूरजमल जाट और मल्हार राव होलकर इन अपमान भरे शब्दों को बर्दाश्त नहीं कर सके, और राज्यसभा से उठकर चले गए। तथा तटस्थता का रास्ता अपनाया। तत्पश्चात ज्योंही अब्दुल शाह अब्दाली को इन दोनों सेनापतियों के सैनिक विद्रोह का पता चला, अब्दुल शाह अब्दाली ने ब्राह्मण राजा सदाशिव

राव भाऊ की सेना पर हमला कर दिया। सदाशिव राव भाऊ युद्ध के मैदान में मारा गया, और सदाशिव राव भाऊ की रियासत पर कब्जा कर लिया। यदि सदाशिव राव भाऊ ने चौधरी सूरजमल और मल्हार राव होलकर का अपमान न किया होता, तो उसकी रियासत पर आंख उठाने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता था।

सर छोटू राम कानून में पोस्ट ग्रेजुएट थे। इसलिए ब्राह्मणों की बौद्धिक बदमाशी को बड़ी बारीकी से भांप लेते थे। गांधीजी स्वराज के लिए संघर्षरत थे। किंतु सर छोटूराम गांधीजी के स्वराज का विरोध कर रहे थे। उन्हें संदेह था, कि गोरे अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद, कहीं काले अंग्रेजों के हाथों में सत्ता न आ जाए। वह स्वतंत्र भारत में किसानों और मजदूरों की सरकार चाहते थे।

झुग्गी झोपड़ी में जन्मे चौधरी चरण सिंह को भला कौन नहीं जानता। चौधरी चरण सिंह को शासक जातियों ने जातिवादी नेता के रूप में प्रस्तुत किया। और लोगों ने मान भी लिया। चौधरी चरण सिंह गाजियाबाद में रह रहे थे, घर में जगह कम पड़ने की वजह से, वे स्थाई रूप से मेरठ आ गए। चौधरी चरण सिंह का रसोईया मानसिंह अनपढ़ था, और जाति से चमार था। चौधरी चरण सिंह का अछूत रसोइए से कितना लगाव था। "कि जब गाजियाबाद से मेरठ चलने की बात हुई, तो अछूत रसोईया उदास हो गया। बड़ी बेटी ने पिता से कहा, रसोईया बहुत दुखी है।" चौधरी चरण सिंह ने तुरंत टोका, "बेटी रसोईया नहीं, यह तुम्हारे चाचा हैं। चाचा कहा करो।" उन्होंने रसोईया को बुलाया, "क्यों भई, क्या बात है, मेरे साथ मेरठ चलना चाहते हो। अच्छा तो ठीक है, तैयार हो जाओ"। बाद में वह रसोईया परिवार का सदस्य बन गया। उसके बच्चों की सरकारी नौकरी लगवाने में उन्होंने पूर्ण सहायता की। तथा मानसिंह के छोटे भाई को दान में कई एकड़ जमीन भी दी। तथा उनके बेटों की तरह, भाई के बेटों को भी नौकरी लगवाने में सहायता की।

चौधरी चरण सिंह के आदर्श कबीर थे। इसलिए अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार में उनकी आस्था नहीं थी। जाति प्रथा के घोर विरोधी थे। गांधीजी के अछूतोद्धार का नाटक चल रहा था। जिसे डॉक्टर अंबेडकर और सर छोटूराम चुनौती दे रहे थे। एक बार पढ़ाई करते समय छात्रावास में छुआछूत के कलंक को मिटाने में बहस छिड़ गई। चौधरी चरण सिंह ने तुरंत भंगी के हांथ से बनवा कर खाना खाया। बस फिर क्या था? पूरे कालेज और छात्रावास में

तूफान आ गया जाट के छोरे ने भंगी से खाना बनवा कर खा लिया। हरफनमौला चरण सिंह में फक्कड़ कबीर की अकड़ ने जैसे प्रवेश ले लिया था।

चौधरी चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश विधानसभा में अच्छी खासी संख्या के साथ प्रवेश किया। और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। 1952 में चौधरी चरण सिंह ने जमीदारी प्रथा का उन्मूलन कर, शासक जातियों की नींद हराम कर दी।

जब चौधरी चरण सिंह का निधन हुआ। और उनके अनुयायी दिल्ली के राजघाट परिसर में चौधरी चरण सिंह का समाधि स्थल बनाने की पहल की। तो शासक जातियों ने विरोध किया। इसलिए नहीं कि चरण सिंह जाट हैं। बल्कि इसलिए, कि उन्हें मालूम है चौधरी चरण सिंह इतिहास पुरुष न बन जाए। क्योंकि जिस समाज का इतिहास नहीं होता, उसका कोई भविष्य नहीं होता है।

....

किसी को क्या मालूम था, कि उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर से 13 किलोमीटर पश्चिम नोहटा रोड पर स्थित अरनावली गांव के एक संपन्न जाट किसान परिवार में, पिता निधिराम और माता चंदनकौर की कोख से एक ऐसा बालक जन्म लेगा, जो आगे चलकर महान दार्शनिक एवं वैज्ञानिक के रूप में अपनी विलक्षण प्रतिभा से अधिकार वंचित, शोषित, पीड़ित के लिए, मानवता के हाथों में जागृति की मशाल सोपेगा। जिससे वे अपने बहुजन समाज के जीवन में रोशनी ला सकेंगे।

चौ. महाराज सिंह भारती का जन्म 1 नवंबर 1918 को ऐसे समय हुआ, जब भारत में स्वतंत्रता संग्राम का आंदोलन चल रहा था। पिता निधराम 125 एकड़ जमीन के मालिक थे। इतनी बड़ी संपत्ति के मालिक होते हुए भी, वह अनपढ़ थे। माता चंदन कौर थोड़ी बहुत पढ़ी लिखी थीं। चौधरी महाराज सिंह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। भारतीय समाज में जन्म लेने वाला बच्चा, जन्म लेते ही जाति में बंध जाता है। जिसप्रकार महाराज सिंह को विरासत में बिना कुछ किए धरे पिता की अकूत संपत्ति मिल गई। उसीप्रकार निधराम जाट के घर में जन्म लेने कारण महाराज सिंह को विरासत में जाट जाति मिल गयी। सामाजिक व्यवस्था ने उन्हें जाट जाति में बांध दिया।

अनपढ़ माता पिता ने महाराज सिंह को शिक्षित बनाने का संकल्प लिया। और स्कूल भेजना शुरू कर दिया। यद्यपि पिता जमीदार और दबंग थे, फिर भी ब्राह्मणी व्यवस्था में उनकी हैसियत सछूत शूद्र की ही थी। इतना जरूर था कि सछूत शुद्र होने के नाते स्कूल में उनके साथ कोई भेदभाव नहीं होता था। जैसा कि अछूत शूद्रों के साथ होता था। विद्यार्थी जीवन में भी अछूत शूद्रों के साथ हो रहे जातीय भेदभाव को बराबर देखते थे। अछूतों और पिछड़ों के मुरझाए चेहरों को देखकर उनका दिल भर आता था। उन्होंने 1937 में हाईस्कूल पास की। उसके बाद उन्होंने स्कूली शिक्षा से नाता तोड़ लिया। उनके सामने केवल एक ही सवाल था, कि लोगों के सामने समस्या ही समस्या है। इसी उधेड़बुन में उन्होंने स्कूली शिक्षा को अलविदा कह दिया। इसी बीच 1939 में ग्राम सदरपुर गाजियाबाद के दंपति केहर सिंह एवं बलवंत कौर की पुत्री चरण कौर से महाराज सिंह का विवाह संपन्न हो गया। पुत्र विनोद भारती, पुत्री आशा और सुधा अभी जिंदा है। पुत्र विनोद भारतीय कृषक हैं। बड़ी बेटी आशा अमेरिका में रहती है। छोटी बेटी मेरठ शहर में है। सभी के सभी वैवाहिक बंधन में बंध चुके हैं।

स्कूली शिक्षा के दौरान ही उन्होंने उर्द, फारसी, हिंदी और अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण की। ब्राह्मणी बौद्धिक बदमाशी की शोध के लिए विश्व का भ्रमण किया। और विदेशों में जाकर अनेक भाषाओं का ज्ञान लिया। उन्हें पता चला कि दिल्ली में रशियन एंबेसी में रशियन भाषा सीखने की व्यवस्था है। उनकी उत्कंठा को देख राजदूत की पत्नी ने उन्हें रशियन भाषा पढ़ाने की सहमति जतायी। महाराज सिंह गांव अरणावाली से मेरठ शहर प्रतिदिन साइकिल से आते, और मेरठ से रोज दिल्ली रशियन एंबेसी, रशियन भाषा सीखने के लिए जाना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार उन्होंने रशियन भाषा सीखी।

बहुजनों के हित के लिए महाराज सिंह समाजवादी आंदोलन से जुड़े और उन्होंने अपने नाम के साथ भारती लिखना शुरू कर दिया। अब वह महाराज सिंह से महाराज सिंह भारती कहलाए जाने लगे। उन्होंने भारत में जहां महामानव बुद्ध, राष्ट्रपिता जोतिबा फुले, पेरियार रामास्वामी नायकर और बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक दर्शन को पढ़ा। वही महान दार्शनिक कार्ल मार्क्स, लेनिन, माओत्से तुंग के दर्शन को भी पढ़ा। उन्होंने जहां एक तरफ ब्राह्मणों द्वारा रचित धर्मग्रंथों वेद, पुराण, उपनिषद, स्मृति ग्रंथों को पढ़ा। वही दूसरी तरफ कुरान, बाइबिल, गुरुग्रंथ साहिब का भी गहन अध्ययन किया। सर्वप्रथम सोशलिस्ट पार्टी से उन्होंने 1952

में उत्तर प्रदेश से विधानसभा का चुनाव लड़ा, किंतु वे हार गए। 1958 से 1964 तक सोशलिस्ट पार्टी की तरफ से विधान परिषद के सदस्य चुने गए। 1967 में भारती जी ने संसोपा के टिकट पर मेरठ संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा और आजाद हिंद फौज के मेजर जनरल शाहनवाज खां को भारी बहुमत से हराया। सांसद बनने के बाद कनॉट प्लेस में उन्होंने तमिल भाषा की शिक्षा भी ग्रहण की। समाजवादी आंदोलन के दौरान उन्होंने अपने व्यक्तिगत खर्चे से विश्व का भ्रमण किया। विधान परिषद सदस्य और सांसद चुने के बाद भी, कभी सरकारी खर्च से विश्व भ्रमण नहीं किया। विश्व भ्रमण करने का उद्देश्य भारत की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों का विश्व के देशों से तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस कार्य में उन्हें अपनी निजी संपत्ति, जो जमीन थी, उसे भी बेचना पड़ा था। डॉ राम मनोहर लोहिया की राजनीतिक पार्टी से जुड़ने के कारण उनकी मुलाकात महान् समाजवादी चिंतक रामस्वरूप वर्मा से हुयी। 1 जून 1968 को भारती जी, माननीय रामस्वरूप वर्मा के साथ मिलकर "अर्जक संघ" नाम के सामाजिक संगठन की स्थापना की। तत्पश्चात इनकी मुलाकात महान् क्रांतिकारी समाजवादी चिंतक "बाबू जगदेव प्रसाद" से हुयी। महामानव गौतम बुद्ध के संदेश, अत्त दीपो भव, अर्थात अपना दीपक खुद बनो, को अमलीजामा पहनाते हुए, अपने मित्रों के साथ संसोपा से अलग होकर शोषित समाज दल की स्थापना की। और नारा दिया :

100 में 90 शोषित हैं, शोषितों ने ललकारा है।
धन, धरती और राजपाट में 90 भाग हमारा है।।
10 का शासन 90 पर, नहीं चलेगा नहीं चलेगा।।।
100 में 90 शोषित हैं, 90 भाग हमारा है।।।।

इन्होंने शोषित समाज दल का लक्ष्य तय किया। "शोषितों का राज शोषितों के लिए, शोषितों के द्वारा होगा"। एक बार डेरापुर कानपुर देहात में अर्जक संघ का प्रशिक्षण शिविर चल रहा था। भारती जी प्रशिक्षक थे। प्रशिक्षण के दूसरे दिन मध्यान भोजन के समय दाल और सब्जी बनी। भूलवश सब्जी में नमक नहीं पड़ा था। भारतीय जी को भोजन परोसा गया, भारती जी ने यह जानकर कि सब्जी में नमक नहीं है तो उन्होंने दाल और सब्जी एक में मिलाकर भोजन कर लिया। किसी से सब्जी में नमक कम होने की बात नहीं की। परंतु जब शिविर आयोजक भोजन करने बैठे, सब्जी में नमक की कमी पर भोजन बनाने वाली महिला से बेहद नाराज हो गए। और डांट फटकार शुरू कर दी। परंतु भारती जी ने शालीनता

का परिचय देते हुए आयोजकों से क्रोध पर नियंत्रण करने की सलाह दी। भारती जी ने लोगों को समझाया, कि जो भी भोजन तैयार हो उसको सुरुचिपूर्ण ढंग से खाने पर स्वास्थ्य ठीक रहता है। स्वाद तो भूख में निहित है, न कि प्रस्तुत भोजन में।

एक बार डॉक्टर राम मनोहर लोहिया ने सोशलिस्ट पार्टी के शिविर में चर्चा के लिए एक विषय रखा। कि सीता और द्रोपदी में कौन आदर्श एवं श्रेष्ठ नारी है। भारती जी को जब पता चला, तो उन्होंने कहा, "लोहिया पगला गए हैं"। भारती जी के कथन को लोहिया जी के चहेते समाजवादी नेता राजनारायण ने ज्यों का त्यों डॉक्टर लोहिया तक पहुंचा दिया। भारती जी शिविर में तलब किए गए। उपस्थित संस्था के कार्यकर्ता कोई सीता को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत कर रहा था। तो कोई द्रौपदी को। जब भारती जी का नंबर आया, तो लोहिया जी ने बड़े आक्रोश भरे शब्दों में भारती जी से पूछा कि, "आपने मुझे कहा कि लोहिया पगला गए हैं क्या? यह सच है"। भारती जी ने कहा कि "हां मैंने इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है। आप सिद्ध करो कि मैं पगला गया हूं"। भारती जी ने विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा : "कि राजा जनक ने अपनी बेटी सीता को इस शर्त पर किसी को सौंपने का निर्णय लिया, कि जो शिव का धनुष तोड़ देगा, उसे सीता को सौंप दिया जाएगा। यदि सीता आदर्श नारी होती, तो अपने पिता के समक्ष अपनी इच्छा जाहिर करतीं। सीता गूंगी बनी रही होंगी, सीता आदर्श और श्रेष्ठ कैसे हो सकती हैं"। द्रोपदी के आदर्श और श्रेष्ठ नारी के प्रश्न पर सवाल खड़ा करते हुए भारतीय जी ने कहा : "जब अर्जुन द्रौपदी को जीत कर लाये और मां से कहा कि मां मैं एक चीज जीतकर लाया हूं। मां ने अर्जुन से कहा, बेटा तुम पांचों भाई मिल बांट कर उसका उपयोग करो। द्रोपदी अगर आदर्श नारी होती, तो वह इस बात का विरोध करतीं। द्रोपदी वस्तु नहीं, बल्कि मातृशक्ति नारी और समाज की अस्मिता थीं। इसलिए सीता और द्रौपदी किसी भी दशा में आदर्श नारी नहीं हो सकतीं"। भारती जी के जवाब को सुनकर लोहिया निरुत्तर हो गये। और आगे वे कोई प्रश्न करने की हिम्मत नहीं जुटा सके।

1965-66 में भारत में अकाल पड़ गया। सरकार ने विदेशों से अनाज आयात किया। उस वर्ष 300 मन चना पैदा हुआ था। जो घर में रखा हुआ था। भारती जी ने बेटे विनोद से कहा कि, "खेत की डोर तोड़कर उन्हें बनवाओ। कोई भी मजदूर अकाल से न मरने पाये। भारती जी ने अपनी 25 एकड़ जमीन स्कूल और बेघर मजदूरों को घर बनाने के लिए दान में दे दिया। 125 एकड़ जमीन में से, 105 एकड़ जमीन बहुजनों के कल्याण में उपयोग किया।

आज उनके पास मात्र 20 एकड़ जमीन है। जिस पर चौधरी महाराज सिंह भारती जी के पुत्र, विनोद भारती अपने पुत्र मनीष भारती के साथ कृषि कार्य कर रहे हैं।

चौधरी महाराज सिंह भारती ने भारत की दुर्दशा के कारणों की खोज में देश क्या, विदेशों का भ्रमण किया। और अंततः इस नतीजे पर पहुंचे, कि भाग्यवाद, पुनर्जन्म, अंधविश्वास, पाखंड, चमत्कार, आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक और जाति की जननी ब्राह्मणवादी व्यवस्था है। और इसी व्यवस्था के कारण भारत का बहुजन समाज लोकतांत्रिक भारत में बेबस और लाचार है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था का समूल विनाश और मानवतावादी व्यवस्था की स्थापना को ही भारती जी ने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। अपने मिशन का खुलासा उन्होंने अपनी पुस्तक "ब्राह्मणवाद की शव परीक्षा" में बड़े स्पष्ट ढंग से किया है।

भारतीय जी का संपूर्ण दर्शन संविधान एवं विज्ञान सम्मत है। जो मिसाइल की तरह ब्राह्मणवाद के सभी आर्गन्स पर बौद्धिक बमबारी करता है।

चौधरी महाराज सिंह भारती का सामाजिक दर्शन समता, ममता और मैत्री पर आधारित है। जाति प्रथा पर प्रहार करते हुए भारतीय जी कहते हैं कि, जो लोग यह मानते हैं कि जाति होती है, उन्हें यह भी बताना होगा कि बीज से जाती बनती है।

जैसे गेहूं के बीज से गेहूं का पौधा और कद्दू के बीज से कद्दू का पौधा पैदा होता है। ऐसे ही ब्राह्मण के बीच से ब्राह्मण, अहीर के बीज से अहीर, भंगी के बीज से भंगी पैदा होता है। जातिवाद में विश्वास करने वाले लोग प्राय: ऐसा समझते हैं कि ब्राह्मण के बीज से ब्राह्मण पैदा होता है। परंतु यदि थोड़ा सा ध्यान देकर सोचा जाए तो यह बीज वाली बात सर्वथा निराधार और झूठी है। तथाकथित ऊंची जाति वाले लोग, जो जमीदार, साहूकार, तालुकदार और अमीर लोग रहे हैं। यह अपने मन बहलाने के लिए हमेशा वेश्याओं के कोठों पर जाते रहे हैं। उनकी जाति के हिंदुओं के बीज से किसी वेश्या के घर ब्राह्मण क्षत्री पैदा नहीं हुए, हमेशा भड़वे पैदा हुए हैं। जब यह लोग बड़े लोग व्यवसायों में समय बिताते थे, तो जाति के छोटे समझे जाने वाले मजदूर, खेती व कारोबार को चलाते थे। उन स्वस्थ नौजवानों के बीज मालकिन के आदेश पर इन तथाकथित बड़े लोगों की घरवालियों में चला जाता था। और इन ऊंची जाति की महिलाओं के पेट से हलवाहे के बीज से पैदा हुए बच्चे, कभी पासी और चमार नहीं कहलाए। वे सब ऊंची जात के बच्चे कहलाए। गेहूं का बीज आप चाहे जिस खेत में वो दीजिए, चाहे चोरी से बोया जाए चाहे सबके सामने, परंतु जब कभी जमेगा तो

गेहूं का ही पेड़ होगा। ऐसा नहीं हो सकता, कि चोरी से अगर गेहूं बो दिया गया, तो गेहूं की बेल चल जाएगी। दुनिया भर के पुरुषों में जो बच्चा बनाने का बीज है, वह गेहूं और कद्दू की तरह किसी जाति के बीज नहीं हैं। सब आदम जात के बीज हैं। हर आदमी, आदमी का बच्चा पैदा करता है। इसलिए बच्चे बिना बताए किसी जाति में पहचाने नहीं जा सकते। इतने बड़े सत्य को ब्राह्मणवाद ने कितनी आसानी से नकार दिया। और बीज का जातिवादी सिद्धांत, जो विज्ञान के आधार पर, असाधारण बुद्धि के आधार पर, सफेद झूठ है। और जिसको हम रोज अपनी आंखों के सामने झूठा साबित होते हुए देखते हैं। झूठ को लोगों ने सच मानकर अपना लिया है।

जाति ब्राह्मणवाद की एक ऐसी यंत्रणा है, जो कुछ लोगों को स्वाभिमान प्रदान करती है, तो कुछ लोगों को अपमान। कुछ लोग जो अपने को ऊंची जाति का सदियों से मानते आ रहे हैं। वह बड़े शान के साथ कहते फिरते हैं कि उनकी रगों में किसी चमार-भंगी का खून नहीं, बल्कि क्षत्रियों का खून है। भारती जी खून के प्रमाण को जताते हुए कहते हैं, कि वैज्ञानिक उन्नति के पहले अक्सर लोगे कहा करते थे और आज भी बहुत से लोग कहा करते हैं, कि मेरी रगों में मेरे बाप का खून है। विज्ञान के आधार पर किसी मानव के बदन में उसके बाप का खून नहीं होता है, बाप का बीज मां के बीज से मिलकर शरीर को जन्म देता है। पर शरीर को बनाने में सारा खून मां का ही होता है। बाप के रक्त की एक बूंद भी औलाद के शरीर में नहीं होती है। जाति के आधार पर बहुत से लोग समझते हैं कि ब्राह्मण का खून कुछ अच्छी नस्ल का होता है और भंगी का खून कुछ खराब नस्ल का होता है। विज्ञान के आधार पर दो श्रेणी बनाई गई हैं। उनमें अधिकांश लोगों के खून पॉजिटिव और थोड़े लोगों का खून निगेटिव होता है। रक्त वर्गीकरण के ग्रुपों में, ए ग्रुप-बी ग्रुप-ए बी ग्रुप, ओ ग्रुप होते हैं। ऐसी एक भी जाति नहीं है जिसके स्त्री पुरुष में एक ही ग्रुप का रक्त पाया जाता हो। अब तो रक्तदान होता है, अस्पताल को खून बेचा जाता है। जिसमें प्रत्येक खून को उसके ग्रुप के आधार पर ठंडे गोदामों में रखा जाता है। कल अगर कोई ब्राह्मण दुर्घटनाग्रस्त हो जाए और उसे खून देने की जरूरत हो। यदि किसी भी ब्राह्मण को पकड़कर उसका खून उस घायल ब्राह्मण को दे दिया जाए, तो घायल ब्राह्मण की तत्काल मृत्यु इसलिए हो सकती है। अतः ब्राह्मण ने जो खून दिया है और वह खून घायल ब्राह्मण के ग्रुप का नहीं है, डॉक्टर दोनों खून की जांच करता है, घायल वाले पुरुष के खून की और खून देने वाले के खून की। यदि दोनों का खून एक ही ग्रुप का है तो खून दिया जा सकता है। अन्यथा नहीं दिया जा सकता रक्तदान के लिए। इससे पता चलता है कि प्रत्येक जाति में सभी ग्रुपों का और सभी प्रकार

का खून मिलता है। अतः रक्त के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन आदमी किस जाति का है।

यदि हम मां के पेट से जाति को बनना मान लें, तो फिर हर हालत में एक मां को एक ही जात के बच्चे को जन्म देना चाहिए। कुलीन घरानों की बाल-विधवा वेश्या बनने के बाद कुलीन बेटे को जन्म नहीं देती। इसीप्रकार जब कोई ऊंची जाति की औरत किसी शूद्र के साथ भाग जाती है और उसकी पत्नी बन जाती है, तब भी उसके पेट से द्विज पैदा नहीं होते, शुद्र पैदा होने लगते हैं। इसका एक ही अर्थ है कि हमारी माताओं और बहनों के पेट से किसी जाति विशेष के बच्चे का जन्म नहीं होता, वह तो इंसान के बच्चे को जन्म देती हैं।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने राष्ट्रपिता ज्योतिबा फुले के सामाजिक आंदोलन की प्रतिक्रिया में समाज सुधार के नाम पर आर्य समाज की स्थापना की। क्योंकि जोतिबा फुले ने ब्राह्मणवाद की जड़, ब्राह्मणवादी ग्रंथों की व्यवस्था पर प्रहार किया था। समाज की दबंग जातियां, जो ब्राह्मणवादी मूल्यों को ध्वस्त कर सकती थीं, वह आर्य समाज के झांसे में आकर ठंडी पड़ गयीं। स्वामी जी का सामाजिक आंदोलन समाज सुधार का आंदोलन नहीं, बल्कि षड्यंत्र का आंदोलन था। आज भी पिछड़े वर्ग के आर्य समाजी लोग इतने अधिक दिग्भ्रमित हैं, कि बड़े बुजुर्गों के निधन पर सनातनी पद्धति पर अमल करते हैं और ब्रह्मभोज देते हैं। क्योंकि आर्य समाजी और सनातनी सब एक ही है। वर्षों से आर्य समाज ने बहुत से शूद्रों को जनेऊ देकर द्विज बनाना चाहा। परंतु जनेऊ पहन कर कोई भी शुद्र द्विज नहीं बन पाया। जब तक ब्राह्मणों में से शुद्र नहीं बनेंगे, तब तक शूद्रों को भी ब्राह्मण नहीं बनाया जा सकता है। बिना वेदों को चुनौती दिए हुए, जातिवाद को चुनौती नहीं दी जा सकती।

देश के 90% लोग यदि सदियों तक अशिक्षित रहे, तो उसका कारण ब्राह्मणवाद है। जहां एक और पूरी दुनिया के लोग मानव को विवेकशील बनाने के लिए अधिक से अधिक शिक्षा देने का प्रयास करते हैं। वहीं दूसरी ओर अकेला ब्राह्मणवाद समुदाय ऐसा है, जो शिक्षा का घोर विरोधी रहा है। ब्राह्मणवाद में 90% लोग शूद्र हैं। खेती करने वाले, कल कारखाने चलाने वाले, जितने मेहनतकश या उत्पादक लोग हैं। बिना अपवाद वह सभी शुद्र हैं। उत्पादनकर्ता किसी शूद्र को पढ़ने की आज्ञा ब्राह्मणवाद नहीं देता।

बौद्ध धर्म के ह्रास के बाद भारत में जब से ब्राह्मणवाद का बोलबाला हुआ। तभी से कारीगर और किसान-मजदूर अज्ञान के कारण जानवरों की स्थिति में ला दिए गए। रहे ऊपर के 10%, उसमें भी वैश्य का पढ़ना बहुत आवश्यक नहीं समझा गया। वैश्य के लिए वही खाते की भाषा मुंडी हिंदी बना दी गई, जिसमें प्रायः मात्रा नहीं लगती है जो लिखता है वही पढ़ सकता है।

एक मुनीम ने अपने सेठ के घर पर एक पत्र लिखा था कि, लालाजी अजमेर गए, बड़ी बहू को भेज दो। मात्रा के अभाव में घर पर पत्र पढ़ा गया कि लाला जी आज मर गए। बड़ी बहू को भेज दो। बही के स्थान पर बहू रोती-बिलखती चली आई। खाते की मुंडी हिंदी द्वारा यह तो हो सकता है कि वह वैश्य वर्ग अपनी बातों को छुपाने में और धन कमाने में अधिक सफल रहा। उस लीपि के द्वारा ज्ञान नहीं प्राप्त किया जा सकता है और इसप्रकार शूद्रों के साथ प्रायः वैश्य भी अनपढ़ ही रह गए।

ब्राह्मणवाद में पढ़ाने का अधिकार केवल ब्राह्मणों को ही था। और जो पढेगा उसे पहले जनेऊ लेना होगा। क्षत्रियों को खुली छूट दी गई कि, यदि वह चाहे तो 16 वर्ष की आयु में भी जनेऊ ले सकता है। इसलिए क्षत्रिय को भी शिक्षा न लेने के लिए उत्साहित किया गया। जब पूरा देश शिक्षा से वंचित हो, फिर शिक्षा में मुकाबला समाप्त हो जाता है। समाज में ब्राह्मण जन्म से ऊंचा है, वह पढ़े या न पढ़े आदर सम्मान तो मिलेगा ही। इसलिए उसे भी पढ़ने की क्या जरूरत है।

अंधविश्वास को प्रहार करते हुए भारती जी कहते हैं, "ब्राह्मणवाद की सभी मान्यताएं विज्ञान विरोधी हैं, ब्राह्मणवाद अंधविश्वास को फैलाता है। अपने झूठ धार्मिक रूप दे देता है। जैसे : जब शिवजी ने पार्वती से शादी की, तो शादी में ही पार्वती एक लड़का अपने साथ लाई थीं। जरूर वह लड़का मित्र की संतान रही होगी। परंतु उसे भगवान का वरदान बता दिया गया। एक रोज पार्वती स्नान कर रही थीं, पहरे पर वह लड़का था, ताकि कोई उसकी मां को नंगा नहाता न देखे। बाहर से शिवजी आ गये, लड़के ने जब उन्हें अंदर जाने से रोका, तो उन्होंने क्रोध में आकर लड़के का सिर काट दिया। बाद में पता चलने पर पार्वती बहुत नाराज हुयीं। शिवजी मौत के देवता हैं, जिनसे दुनिया में कुछ छुपा नहीं है। उन्हें बहुत खोजने पर भी उस लड़के का सिर नहीं मिला। उन्होंने एक हाथी के बच्चे की गर्दन काटकर, उस बच्चे की गर्दन पर लगा दिया। इस प्रकार वह लड़का गणेश जी बन गया। हाथी की

मोटी खाल, मोटी गर्दन, बच्चे की गर्दन में कैसे फिट हो गई और दोनों का ब्लड ग्रुप कैसे मिल गया। और दोनों गर्दन कैसे काम करने लगी, एकदम झूठ है। परंतु शिव जी भगवान जो ठहरे। ब्राह्मणवादी सभी कार्यों में और पूजा पाठ में पहले गणेश जी का पूजन कराते हैं। आप यह बहस नहीं कर सकते, कि जानवर की खोपड़ी आदमी की खोपड़ी से अधिक विवेकशील कैसे हो सकती है।

समाजवादी पराया प्राय: राग अलापते रहते हैं, कि जो समाजवादी है वह जातिवादी नहीं हो सकता। और जो जातिवादी है वह समाजवादी नहीं हो सकता। समाजवादियों के ये कथन भारत से बाहर के मुल्कों में सच हो सकतें हैं। किंतु भारत में सरासर झूठ साबित होगा। भारती जी समाजवाद की पोल खोलते हुए कहते हैं, भारत में मुस्लिम समाज है 5-6, करोड़ ईसाई समाज है एक करोड़ के ऊपर। बौद्ध समाज है लगभग एक करोड़। सिख समाज है वह भी एक करोड़ के लगभग। और यह जो 60 करोड़ लोगों की भीड़ है, यह जो ब्राह्मणवादी हिंदू हैं, इनका कोई समाज नहीं है। ब्राह्मण को छोड़ सभी जाति नीच है। नीचता में डिग्रियों का अंतर है। हिंदुओं की कोई जाति किसी दूसरी जाति के साथ मिलकर समाज बना ही नहीं पाएगी। क्योंकि एक ऊंचा और एक नीचा मिलकर आपस में समता का व्यवहार और आचरण कर ही नहीं सकता। चमार समाज हो सकता है। ब्राह्मण समाज हो सकता है। अहीर समाज हो सकता है। आदि-आदि हजारों छोटे समाज हो सकते हैं। लेकिन हिंदू समाज नहीं हो सकता। और जब एक हिंदू, दूसरी जाति के हिंदू के साथ मिलकर समाज नहीं बना सकता, तब कोई हिंदू : किसी मुसलमान, ईसाई, बौद्ध आदि के साथ मिलकर एक भारतीय समाज कैसे बना सकता है? जब भारत में समाज ही नहीं बन सकता, तो समाजवाद के आने का प्रश्न ही नहीं उठता। सरकार पर जिस जाति के लोगों का कब्जा हो जाएगा, उसी जाति का समाजवाद आ जाएगा। आजादी के बाद से अब तक सभी जगह अधिकांश नेतृत्व ब्राह्मणों के हाथ में है। इन सब ऊंचे पदों पर जाति के आधार पर सबसे ज्यादा आदमी ब्राह्मण जाति के ही हैं। हालांकि ब्राह्मणों की संख्या, चमार-अहीर आदि जातियों से बहुत कम है। ब्राह्मणवाद के रहते समाजवाद की कल्पना करना देश को धोखा देना है।

भारती जी का सामाजिक दर्शन वैज्ञानिक समाजवाद पर आधारित है। उनके अनुसार सृष्टि में पदार्थ के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। पदार्थ के कणों के द्वारा द्वंद से सृष्टि चल रही है। यह वैज्ञानिक समाजवाद का प्रथम सिद्धांत है। जो लोग समाजवादी होने का दावा करते हैं। और किसी अदृश्य शक्ति दुर्गा, देवता आदि की पूजा-अर्चना भी करते हैं। वह

लोग कभी समाजवादी हो ही नहीं सकते। समाजवाद बौद्ध दर्शन की भांति पदार्थवादी दर्शन है। इस दर्शन में आत्मा-परमात्मा, भूत-प्रेत, देवी-देवता आदि में किसी का भी कोई औचित्य नहीं है। उक्त अदृश्य दैवीय शक्तियां धूर्तों द्वारा प्रचारित की जाती हैं, और मूर्ख उन्हें मानते हैं। जिस प्रकार सृष्टि के दो कोणों का द्वंद तीसरे रूप को जन्म देता है, और तीसरा रूप जन्म लेते ही, किसी अन्य कण से द्वन्द करता हुआ चौथे रूप को जन्म देता है, आदि आदि। उसी प्रकार मानव समाज में विवेक द्वारा विचारों का द्वंद अनवरत चलता रहता है। लगातार नए नए विचार जन्मते रहते हैं।

यदि समाज में गैर बराबरी है, तो राजनीति में भी गैर बराबरी ही दिखेगी। चौधरी महाराज सिंह भारती का राजनीतिक दर्शन शोषितों का राज, शोषितों के द्वारा, शोषितों के लिए था। भारती जी का जुड़ाव अर्जक संघ सामाजिक संगठन से था। उनका मानना था, कि सामाजिक परिवर्तन के बगैर राजनीतिक परिवर्तन संभव नहीं। गैर बराबरी पर आधारित सामाजिक ढांचे को ढहाये बगैर प्राप्त सत्ता स्थिर सत्ता नहीं हो सकती।

जातिवाद की ऊच-नीच भावना एक दूसरे से घृणा और जलन पैदा करती है। जब कोई चुनाव होता है, तो आम आदमी उसे उसकी जाति से नापता है। चाहे जितना प्रभावशाली भंगी जाति का लड़का चुनाव में खड़ा कर दिया जाए, परंतु गैर भंगी उसे इसलिए पसंद नहीं करेगा, क्योंकि वह उस से छोटी जाति का लड़का है। कोई नेता गुणों से चाहे कितना ही संपन्न क्यों ना हो, परंतु ऊंची जात का कोई आदमी उसको इसलिए नेता नहीं मानना चाहता, क्योंकि वह उससे छोटी जाति का है। राजनीति में इसके बड़े नतीजे निकले हैं। जितनी ऊंची जाति होती चली गई, उतने ही नेता बनने के अवसर बनते चले गए। इसलिए आजाद भारत की राजनीति ऊंची जात की राजनीत बनकर रह गई। ऊंची जाति का नेतृत्व सभी मान लेंगे। क्योंकि ब्राह्मणवाद में ऊंची जाति सम्मान के योग्य समझी जाती है। ब्राह्मण सबसे ऊंची जाति है। इसलिए जनसंख्या बहुत कम होते हुए भी, बड़ी संख्या में चुनाव जीतने का काम ब्राह्मण का ही हुआ। अखिल भारतीय कहे जाने वाले जितने भी राजनीतिक दल थे या हैं। सभी ब्राह्मणवादी राजनीतिक दल है। ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था : जिसमें ब्राह्मणों को खेती, कारखाने आदि सभी को उत्पादन कार्यों से दूर रखा गया। वही ब्राह्मण आज उनका नेता बन बैठा है। जाति ऊंची होने से उसको सभी वोट दे सकते हैं। भारत के संविधान में बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों को एक समान माना जाता है। यह कानूनी स्थिति है। व्यवहारिक स्थिति इससे विपरीत है। ब्राह्मणवाद

में ब्राह्मण को सबसे ऊंचा माना गया है, इसलिए राजनीति के प्रत्येक क्षेत्र पर ब्राह्मणों ने अपना नेतृत्व जमा लिया है। शूद्रों का अनेक जातियों में बटवारा होने के कारण, ब्राह्मण अल्पसंख्यक होते हुए भी बहुसंख्यकों का नेता बन गया।

संविधान सभा के सदस्य जोगेंद्र नाथ मंडल ने बाबासाहेब को संविधान सभा के चुनाव में विजय दिलाने के लिए अपील करते हुए वोट की कीमत पर बोलते हुए कहा था, "युद्ध के क्षेत्र में तलवार ताकतवर होती है। दर्शनशास्त्र के मैदान में कलम ताकतवर होती है। लोकतंत्र के क्षेत्र में वोट ताकतवर होता है"।

भारती जी का मानना था कि देश संविधान से चलेगा, संविधान विरोधी शास्त्रों से नहीं। भारती जी शोषित समाज दल के सिद्धांत और वक्तव्य का खुलासा करते हुए कहते हैं, देश में प्रचलित भारत की संविधान विरोधी पुस्तकों को जप्त करने की मांग केंद्रीय सरकार से करता हूं। क्योंकि ब्राह्मणवादी पुस्तकें अपृश्यता, जाति-पाति जैसी संविधान विरोधी बातों को ही प्रचारित करती हैं। केंद्र सरकार अविलंब एक कमीशन नियुक्त करें, जिसमें एक बौद्ध, एक ईसाई, एक सिख, दो मुसलमान, 3 अनुसूचित जाति एवं जनजाति व तीन पिछड़े वर्ग के विद्वान, जो भारत में भारत का संविधान विरोधी पोस्ट को सूची बनाकर सरकार को दें और केंद्रीय सरकार उन्हें अविलंब जप्त करे।

उनके राजनैतिक दर्शन के अनुसार, सामान्य कोटा में सफल अभ्यर्थी को आरक्षित कोटे में ना जोड़ा जाए। सामान्य कोटे में चुने गए अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों को छोड़कर, उस वर्ग के शेष अभ्यर्थियों में से ही कोटे को पूरा करने के लिए अभ्यर्थी चुने जाएं। आरक्षित कोटे से चुने जाने वाले अभ्यर्थियों का साक्षात्कार, केवल अनुसूचित जाति और जनजाति के अधिकारी ही करें। प्रोन्नति में भी उपर्तयुक्त सिद्धांत लागू होना चाहिए।

संस्कृत भाषा के माध्यम से पूजा-अर्चना का पूरा कोर्स पढ़कर के, पास करके जब कुछ गैर ब्राह्मण लड़कों की तमिलनाडु की सरकार ने टेस्टी मंदिरों में नियुक्तियां कर दी तो ब्राह्मणों ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। उच्चतम न्यायालय ने केवल ब्राह्मणों को ही मंदिर में पुजारी बनाना उचित ठहराया। इस पृष्ठभूमि में देखा जाए तो केवल ब्राह्मण ही हिंदू होता है।

डॉ. अंबेडकर यह जानने के लिए कि गांधीजी के विचार उनके विचारों से कहां तक मेल खाते हैं, गांधी जी से मिलने के लिए गए। बाबासाहेब ने गांधी जी से पूछा, क्या आप जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था को मांगते हैं। गांधी जी ने हां में उत्तर दिया। इस पर बाबासाहेब ने कहा था, कि वर्ण से जाति, जाति से निरादर तथा अधिक निरादर से छुआछूत उत्पन्न होती है। वर्ण व्यवस्था को मान लेने के बाद आप छुआछूत मिटाने का नाटक क्यों करते हैं? इस घटना के बाद गांधी जी ने चुप्पी साध ली।

विज्ञान की आवश्यकता को समझते हुए, संविधान में धारा 51(क) जोड़ करके कहा है, भारत के प्रत्येक नागरिक तक का करतव्य हो जाता है, कि वह अंधविश्वास को दूर करने और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को चलाने का प्रयास करें। भारत में हजारों वर्षों से ब्राह्मणवाद चलता आ रहा है। ब्राह्मणवादी मान्यताओं के कारण 90% लोगों को ज्ञान प्राप्त करने से पूर्णता रोका गया। 6% वैश्य और क्षत्रियों को ज्ञान प्राप्त प्राप्त करने हेतु हतोत्साहित किया गया। ब्राह्मण महिलाएं भी अशिक्षित ही रहीं। और जब कभी किसी समाज में केवल 2% ब्राह्मण पुरुषों को ही ज्ञान प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार हो। तो साधारण तथा प्रतिद्वंदिता के अभाव में 2% भी ज्ञान प्राप्त नहीं करते। इसलिए हजारों साल तक बिना पढ़े लिखे अथवा केवल अक्षर ज्ञान लिए हुए लोग भारत में पंडित कहलाते रहे। जिस ब्राह्मणवाद की चर्चा हम कर रहे हैं, उसी के कारण मेरे मां-बाप और उनसे ऊपर के मेरे सभी पुरखे हजारों वर्षों से अनपढ़ रहे। इसलिए अपनी पीढ़ी में, मैं पहला पढ़ा लिखा व्यक्ति बन पाया।

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भी एक हिंदू के नाते, हिंदू धर्म को सुधारने का अथक प्रयास किया। परंतु वह अंततः एक नतीजे पर पहुंचे, कि हिंदुत्व को सुधारा नहीं जा सकता है, केवल नकारा जा सकता है।

केवल ब्राह्मणवादी व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें श्रम का अपमान किया जाता है। ब्राह्मणवादियों ने जो जाति बनाई है, उनका बटवारा भी श्रम के आधार पर है। जो भीख मांग कर खाए वह सबसे ऊंची जाति है। जो छीन कर खाए वह नंबर दो की जाति है। जो हेराफेरी करके खाए वह नंबर तीन की जाती है। और जो मेहनत करके, उत्पादन करके खाए, वह सबसे नीची जाती है। जितनी मेहनत कड़ी होती जाएगी, उतनी ही जाति नीची होती चली जाएगी। दुनिया श्रम को सम्मान देती है, और ब्राह्मणवाद श्रम का अपमान करता

है। जब कोई बच्चा जनेऊ धारण करके ब्राह्मण बनता है, तो सबसे पहले वह कुछ घरों में भीख मांगने का काम करता है। भीख मांगना बहुत बेशर्मी का काम है। पुराने जमाने में तो ब्राह्मण जीवन भर भीख ही मांगता था। परंतु आज वह जनेऊ पहन कर भीख मांगता है।

जीवन पर्यंत विज्ञानवाद की अलख जगाने वाले और आजीवन स्वस्थ रहने वाले चौधरी महाराज सिंह भारती का निर्वाण 14. 09. 1995 को, 132, आनंदपुरी, मेरठ (उत्तर प्रदेश) में हुआ।

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.), दिनांक : 31.10.2020
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
संपादक: ए. के. सिंह
मोबाइल : 7355175480